पाठ 30

1. हालाँकि परमेश्वर ने फिरौन और मिस्रियों के पास नौ भयानक विपत्तियाँ भेजी थीं, क्या फिरौन ने इस्राएलियों को जाने दिया?

-नहीं।

2. आखिरी विपत्ति क्या थी जिसे परमेश्वर भेजेगा?

-आखिरी प्लेग मिस्रियों के सभी पहलौठे बच्चों और मवेशियों को मार डालेगी।

3. परमेश्वर ने प्रत्येक इस्राएली परिवार के प्रत्येक पति को क्या करने की आज्ञा दी ताकि उनका पहलौठा न मरे?

-एक साल के नर मेमने या बकरी को चुनने के लिए।

4. परमेश्वर ने इस्राएलियों को किस प्रकार का मेमना या बकरी चुनने की आज्ञा दी थी ताकि उनका पहलौठा न मरे?

- दोष रहित एक।

5. परमेश्वर ने आज्ञा क्यों दी कि एक वर्षीय भेड़ या बकरी दोषरहित हो?

-क्योंकि ईश्वर पूर्ण है।

-क्योंकि परमेश्वर जो कुछ भी कहते हैं वह सब सही है।

-क्योंकि ईश्वर जो कुछ भी करता है वह संपूर्ण होता है।

6. महीने के चौदहवें दिन, परमेश्वर ने इस्राएलियों को मेम्ने के साथ क्या करने की आज्ञा दी?

-परमेश्वर ने आदेश दिया कि मेमने को मार डाला जाना चाहिए।

-परमेश्वर ने आज्ञा दी कि मेमने को मरना चाहिए।

7. परमेश्वर ने यह आज्ञा क्यों दी कि मेमने को अवश्य ही मरना चाहिए?

-यह इस्राएलियों को यह सिखाने के लिए था कि पाप के लिए परमेश्वर की सजा मृत्यु है।

8. परमेश्वर ने इस्राएलियों को मेम्ने के लोहू से क्या करने की आज्ञा दी?

-एक कटोरी में मेमने का खून पकड़ने के लिए।

9. परमेश्वर ने इस्राएलियों को कटोरे में मेम्ने के लोहू का क्या करने की आज्ञा दी?

- परमेश्वर ने इस्राएलियों को आज्ञा दी कि वे लोहू को उस घर के द्वार के ऊपर और दोनों ओर लगाएं जहां वे उस रात मेम्ने का मांस खा रहे होंगे।

10. परमेश्वर ने इस्राएलियों को यह आज्ञा क्यों दी कि वे लोहू के साथ घर के भीतर ही रहें?

- बाहर का लहू इस्त्राएलियों को भीतर से ढांपने के लिथे था।

11. क्या परमेश्वर हमें अपने तरीके से खुद को बचाने की अनुमति देगा?

-नहीं।

12. किसका मार्ग ही एकमात्र मार्ग है जो हमें बचाएगा?

-परमेश्वर का रास्ता।

13. क्या परमेश्वर ने मिस्रियों के सभी पहलौठों को मार डाला जैसा उसने कहा था?

-हां।

14. फिरौन के पहलौठे और मिस्रियों के सभी पहलौठों के मरने के बाद, फिरौन ने क्या किया?

-फिरौन ने इस्राएलियों को जाने दिया।

15. क्या फिरौन या कोई परमेश्वर से लड़कर जीत सकता है?

-नहीं।

-जब परमेश्वर इस्राएलियों को मिस्र से बाहर ले गया, तब परमेश्वर इस्राएलियों को किस देश में ले जा रहा था?

-वापस कनान देश में।

-कनान वह भूमि थी जिसे परमेश्वर ने इब्राहीम, इसहाक, याकूब और उनके वंशजों से वादा किया था।

-जब इस्राएली पहली बार मिस्र आए, तब वे केवल 70 लोग थे।

-अब, मिस्र में 400 वर्ष तक रहने के बाद, इस्राएलियों की संख्या बीस लाख थी।

-परमेश्वर कैसे दो मिलियन लोगों का नेतृत्व करने में सक्षम थे?

आइए पढ़ें निर्गमन 13:21-22

21 दिन में यहोवा इस्राएल के आगे बादल के खम्भे में होकर उनका मार्ग दिखाने को चला, और रात को आग के खम्भे में होकर उन्हें उजियाला दे, कि वे दिन हो या रात।

22 न तो बादल का खम्भा दिन को, और न आग का खम्भा रात को लोगों के साम्हने अपना स्थान छोड़ता था।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को दिन में किस प्रकार अगुवाई दी?

-एक बादल के साथ।

-परमेश्वर ने रात में इस्राएलियों का नेतृत्व कैसे किया?

-आग के खंभे के साथ।

-यदि परमेश्वर इस्राएलियों की अगुवाई नहीं करता, तो क्या वे जानते कि कहाँ जाना है?

-नहीं।

-यदि परमेश्वर इस्राएलियों की अगुवाई नहीं करता, तो उनका क्या होता?

-वे खो जाएंगे और मर जाएंगे।

-क्योंकि परमेश्वर इस्राएलियों से प्रेम करता था, उसने उनका नेतृत्व किया ताकि वे खो न जाएं और मर जाएं।

-परमेश्वर इस्राएलियों को एक समुद्र तक ले गया जिसे लाल सागर कहा जाता है।

-लाल समुद्र पर, परमेश्वर ने इस्राएलियों को कुछ समय के लिए विश्राम करने के लिए कहा।

आइए पढ़ें निर्गमन 14:1-3

1-तब यहोवा ने मूसा से कहा,

2- “इस्राएलियों से कहो कि वे लौटकर मिगदोल और समुद्र के बीच पी हाहीरोत के पास डेरे खड़े करें। उन्हें बालसपोन के ठीक सामने समुद्र के किनारे डेरे खड़े करने हैं।

3-फिरौन सोचेगा, 'इस्राएली लोग देश के चारों ओर चक्कर काट रहे हैं, जंगल से घिरे हुए हैं।'"

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को लाल समुद्र के किनारे तक क्यों ले जाया?

-परमेश्वर मिस्रियों और इस्राएलियों दोनों को दिखाना चाहता था कि वह अकेला ही परमेश्वर है।

-किसने परमेश्वर को बताया कि फिरौन क्या सोच रहा होगा?

-कोई नहीं।

-परमेश्वर को कैसे पता चला कि फिरौन क्या सोच रहा होगा?

-फिरौन के विचार करने से पहले परमेश्वर फिरौन के हर विचार को जानता था।

-परमेश्वर हमारे सभी विचारों को हमारे सोचने से पहले ही जानता है।

-आइए सुनें फिरौन क्या कह रहा था:

आइए पढ़ें निर्गमन 14:5-9

5 जब मिस्र के राजा को यह बताया गया कि लोग भाग गए हैं, तब फिरौन और उसके हाकिमों ने उनके विषय में मन बदल कर कहा, हम ने क्या किया है? हमने इस्राएलियों को जाने दिया है और उनकी सेवा से हाथ धो बैठे हैं!"

6 तब फिरौन ने अपना रथ तैयार किया, और अपक्की सेना को अपके साथ ले लिया।

7-उसने छः सौ उत्तम रथों समेत मिस्र के सब रथों समेत सब के सब रथों पर अधिकारी ठहराए।

8 यहोवा ने मिस्र के राजा फिरौन के मन को ऐसा कठोर कर दिया, कि वह इस्राएलियोंका पीछा करने लगा, जो निडर होकर निकलते थे।

9- मिस्रियों ने - फिरौन के सभी घोड़ों और रथों, घुड़सवारों और सैनिकों ने इस्राएलियों का पीछा किया और उन्हें पकड़ लिया, क्योंकि उन्होंने बालसपोन के सामने पी हाहीरोत के पास समुद्र के किनारे डेरे डाले थे।

- फिरौन इस्राएलियों को फिर से पकड़ने की सोच रहा था।

सो फिरौन ने अपक्की सेना इकट्ठी की, और इस्राएलियोंको फिर पकड़ने को चला।

-इस्राएलियों को फिर से पकड़ने के लिए फिरौन का नेतृत्व कौन कर रहा था?

-शैतान।

-शैतान क्यों चाहता था कि फिरौन इस्राएलियों को फिर से पकड़ ले?

-क्योंकि शैतान इस्राएलियों को नष्ट करना चाहता था।

-जब इस्राएलियों ने फिरौन और उसकी सेना को फिर से उन्हें पकड़ने के लिए आते देखा, तो उन्होंने क्या किया?

आइए पढ़ें निर्गमन 14:10क और 11-12

10 जब फ़िरौन निकट आया, तब इस्राएलियोंने दृष्टि की, और मिस्री उनके पीछे पीछे चल रहे थे।

11-उन्होंने मूसा से कहा, क्या मिस्र में कब्र न होने के कारण तू हमें मरने के लिथे जंगल में ले आया? तू ने हमें मिस्र से निकालकर हमारे साथ क्या किया है?

12 क्या हम ने मिस्र में तुम से नहीं कहा, कि हम को अकेला छोड़ दो; आइए हम मिस्रियों की सेवा करें'? हमारे लिए मरुभूमि में मरने से मिस्रियों की सेवा करना अच्छा होता!"

-इस्राएलियों ने मूसा पर दोष लगाया, और कहा कि उन्हें मिस्र में रहना चाहिए था।

-यद्यपि इस्राएलियों ने परमेश्वर को मिस्र देश में दस विपत्तियां भेजते हुए देखा, फिर भी उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया।

-इस्राएलियों ने ईश्वर पर विश्वास नहीं किया, लेकिन मूसा ने ईश्वर में विश्वास किया।

-यह वही है जो मूसा ने इस्राएलियों से कहा था:

आइए पढ़ें निर्गमन 14:13-14

13-मूसा ने लोगों को उत्तर दिया, "डरो मत। दृढ़ रहो और तुम उस छुटकारे को देखोगे जो यहोवा आज तुम्हारे लिए लाएगा। जिन मिस्रियों को तुम आज देखते हो, वे फिर कभी नहीं देखोगे।

14-यहोवा तुम्हारे लिथे युद्ध करेगा; आपको केवल स्थिर रहने की आवश्यकता है।"

-क्या इस्राएली खुद को बचाने में सक्षम थे?

-नहीं।

-इस्राएली खुद को क्यों नहीं बचा पाए?

-क्योंकि लाल समुद्र उनके आगे था, उनके दोनों ओर पहाड़ थे, और फिरौन और उसकी सेना उनके पीछे थी।

-इस्राएली फंस गए थे।

-अकेला कौन था जो इस्राएलियों को बचाने में सक्षम था?

-परमेश्वर।

-जब आदम और हव्वा को ईडन गार्डन से बाहर निकाल दिया गया, तो वे फिर से बगीचे में प्रवेश करने में सक्षम नहीं थे।

-केवल परमेश्वर ही उन्हें बचाने का रास्ता बना पाए।

-जब इसहाक के हाथ और पैर बंधे हुए थे, और इब्राहीम के चाकू ने उसे बलिदान देना शुरू कर दिया था, इसहाक खुद को बचाने में सक्षम नहीं था।

-इसहाक को बचाने के लिए केवल परमेश्वर ही रास्ता बनाने में सक्षम थे।

-अब जबकि इस्राएली फंस गए थे, वे खुद को नहीं बचा पाए।

-केवल परमेश्वर ही इस्राएलियों को बचाने का मार्ग बनाने में सक्षम था।

-जिस तरह केवल परमेश्वर ही इस्राएलियों को बचाने के लिए रास्ता बनाने में सक्षम था, केवल परमेश्वर ही हमें बचाने का मार्ग बनाने में सक्षम है।

-क्या परमेश्वर ने इस्राएलियों को बचाने के लिए कोई रास्ता बनाया?

आइए पढ़ें निर्गमन 14:21-22

21 तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया, और रात भर यहोवा ने पुरवाई के झोंके से समुद्र को फेर दिया, और उसे सूखी भूमि बना दिया। पानी बंट गया,

22 और इस्राएली सूखी भूमि पर समुद्र के बीच से होकर चले, और उनकी दाहिनी ओर और बायीं ओर जल की शहरपनाह बनी रही।

-परमेश्वर ने लाल समुद्र को खोलने और इस्राएलियों के लिए सूखी भूमि पर समुद्र पार करने का मार्ग बनाने की आज्ञा दी।

-क्या परमेश्वर के लिए लाल सागर को खोलना कठिन था?

-नहीं।

-परमेश्वर के लिए लाल सागर को खोलना कठिन क्यों नहीं था?

-क्योंकि परमेश्वर ने लाल सागर बनाया।

-क्योंकि परमेश्वर सभी समुद्रों के स्वामी हैं।

-क्योंकि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, और सब कुछ कर सकता है।

-इस्राएलियों ने लाल सागर को पार करना शुरू किया।

-क्योंकि फिरौन और उसकी सेना इस्राएलियों को फिर से पकड़ने के लिए आ रही थी, परमेश्वर ने इस्राएलियों की रक्षा के लिए क्या किया?

आइए पढ़ें निर्गमन 14:19-20

19 तब परमेश्वर का दूत, जो इस्राएल की सेना के साम्हने यात्रा करता या, पीछे हट गया। बादल का खम्भा भी आगे से हटकर उनके पीछे खड़ा हो गया,

20-मिस्र और इस्राएल की सेनाओं के बीच में आ रहा है। रात भर बादल एक ओर अँधेरा और दूसरी ओर उजाला लाता रहा; इसलिए रात भर कोई एक दूसरे के पास नहीं गया।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों और फिरौन और उसकी सेना के बीच एक बादल रखा।

-बादल ने इस्राएलियों पर प्रकाश डाला, और फिरौन और उसकी सेना के लिए अंधेरा कर दिया।

-भले ही बादल ने फिरौन और उसकी सेना के लिए अंधेरा कर दिया, फिर भी वे इस्राएलियों का पीछा करते रहे।

-फिरौन और उसकी सेना ने लाल समुद्र में इस्राएलियों का पीछा किया।

आइए पढ़ें निर्गमन 14:23

23 और मिस्रियोंने उनका पीछा किया, और फिरौन के सब घोड़े, और रथ, और सवार उनके पीछे हो लिए समुद्र में चले गए।

-फिरौन और उसकी सेना के इस्राएलियों के पीछे लाल समुद्र में जाने के बाद परमेश्वर ने क्या किया?

आइए पढ़ें निर्गमन 14:24-28

24 रात के अन्तिम पहर में यहोवा ने आग के खम्भे और बादल में से मिस्री सेना पर दृष्टि करके उसको असमंजस में डाल दिया।

25-उसने उनके रथों के पहिए उतार दिए, जिससे उन्हें चलने में कठिनाई हुई। और मिस्रियोंने कहा, हम इस्राएलियोंसे दूर हो जाएं! यहोवा उनके लिये मिस्र से लड़ रहा है।"

26 तब यहोवा ने मूसा से कहा, अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा, कि जल मिस्रियोंऔर उनके रथोंऔर सवारोंके ऊपर फिर बह जाए।

27 मूसा ने अपना हाथ समुद्र पर बढ़ाया, और भोर को समुद्र अपने स्थान पर लौट गया। मिस्री उसकी ओर भागे जा रहे थे; और यहोवा ने उन्हें समुद्र में बहा दिया।

28 और जल फिर बहकर रथों और सवारों पर छा गया, अर्थात फिरौन की सारी सेना जो इस्त्राएलियों के पीछे हो ली थी, समुद्र में चली गई। उनमें से एक भी नहीं बचा।

-परमेश्वर ने फिरौन और उसकी सेना को लाल सागर में डुबो दिया।

-फिरौन की एक भी सेना नहीं बची।

-क्या फिरौन ने परमेश्वर से लड़ाई की और परमेश्वर को पराजित किया?

-नहीं।

-परमेश्वर के खिलाफ कौन लड़ सकता है और परमेश्वर को हरा सकता है?

-कोई नहीं।

-क्या इस्राएलियों में से कोई मरा?

आइए पढ़ें निर्गमन 14:29-30

29 परन्तु इस्राएली सूखी भूमि पर समुद्र के बीच से होकर चले, और उनकी दाहिनी ओर और बायीं ओर जल की एक दीवार थी।

30 उस दिन यहोवा ने इस्राएलियोंको मिस्रियोंके हाथ से छुड़ाया, और इस्राएलियोंने मिस्रियोंको तट पर मरा पड़ा देखा।

-इस्राएलियों में से कोई भी नहीं मरा।

-इस्राएलियों में से कोई क्यों नहीं मरा?

-क्योंकि परमेश्वर ने उनकी रक्षा की।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों की रक्षा क्यों की?

-क्योंकि परमेश्वर ने इब्राहीम और इस्राएलियों के माध्यम से उद्धारकर्ता को भेजने का वादा किया था।

-क्योंकि परमेश्वर भी अब्राहम और इस्राएलियों के द्वारा अपनी बाइबल भेजना चाहता था।

-अगर हम परमेश्वर में विश्वास करते हैं, तो परमेश्वर हमें बचाएगा।

-अगर हम परमेश्वर में विश्वास नहीं करते हैं, तो परमेश्वर हमें नहीं बचाएंगे।